आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 3/जून 2023

Received: 11/06/2023; Accepted: 18/06/2023; Published: 24/06/2023

इक्कीसवीं सदी के कथा साहित्य में 'दौड़'

डॉ.श्रीमती. सी एन होम्बली
सह-प्राध्यापिका,हिंदी
सरकारी प्रथम दर्जा कालेज,
के.आर पुरंम, बेंगलूरु
संख्या: 9880594381

डॉ. श्रीमती. सी एन होम्बली, **इक्कीसवीं सदी के कथा साहित्य में 'दौड़'**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 3/अंक 3/जून 2023, (277-280)

इक्कीसवीं सदी में सामाजिक परिवर्तन क का साहित्य दिखाई देता है । यह उपन्यास भारत के अद्यतन आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियों पर आधारित है । ममता कालिया द्वारा रचित दौड़ आज के मनुष्य की कहानी हैं । आज बाजारवादी संस्कृति का बोलबाला है। भूमंडलीकरण और औद्योगिक समाज ने इक्कीसवी सदी में युवा वर्ग के सामने एकदम नए ढंग से के रोजगार और नौकरी के रास्ते खोल दिए गए हैं जो बाजार के दबाव समूहमें 'दौड़' आक्रमण और निर्ममता तथा अंधी ,मारक तनाव, अपरोक्ष-उनके परोक्ष , नष्ट होते मानव तथा आसन्न खतरे में पड़े मनुष्य को उजागर करती हैं । यह रचना मनुष्यों के पारस्परिक संबंधों की परंपरा का पड़ताल करती हैं । जिसमें चर्चित आर्थिक उदारीकरण ने बाजार और बाजारवादी व्यवस्था को ताकत दी है उसी ने अपने पारस्परिक नाते रिश्तों को अनुदान स्वार्थी और इतना अर्थ केंद्रित , बना दिया है कि बिगड़े परिप्रेक्ष्य मे आज संबंधों के मूल्य और अर्थ बदले नहीं बल्कि कहना चाहिए कि नष्ट हो गए हैं । समग्र उपन्यास का उद्देश्य ही है इसके साथ वर्तमान कालीन परिवर्तनमान भारत के मानचित्रों की अनेक रेखाओं को भी सफलतापूर्वक कराया जा सका है। पहले लोग सीमित वृत्ति करते थे डॉक्टर का बेटा डॉक्टरइंजीनियर का बेटा इंजीनियर परंतु आजकल आर्थिक उदारीकरण ने भारतीय बाजार को , शक्तिशाली बनाया । माता पिता पुत्र भाईसंबंधों में तीव्र ह्रास हुआ है । बहन के-

इस दौड उपन्यास में नायक पवन इलाहाबाद का रहने वाला है । पवन के पिता चाहते हैं कि उनका बेटा एम बी ए व्यवसायिक उपाधि प्राप्त करके व्यापार से संबंध रखने वाली एक अच्छी सी नौकरी पर नियुक्त हो जाए और अपने घर परिवार और अपने घर परिवार और वंश का नाम उज्वल करें न कि सैद्धांतिक उपाधि प्राप्त करके नौकरी न मिलने की समस्या को झेल सके उनकी यह इच्छा पूरी भी हो जाती है । पवन एम बी ए के बाद जबकि वह अंतिम वर्ष की पदवी पढ़ रहा था तभी उसको केंपस इंटरव्यू हो जाती है । इंटरव्यू में वह सेलेक्ट भी हो जाता है । इस तरह बाद में नौकरी के लिए सौ किलोमीटर की 18 दूरी पर अहमदनगर में आ जाता है । मां बाप चाहते थे कि उनका बेटा उनके पास रहे इधर इधर उधर के यहां मेरे लाय" नौकरी कर ले परंतु पूछने के बाद पवन कहता है किक सर्विस कहां यह तो बेरोजगारों का

शहर है । ज्यादा से ज्यादा नूरानी तेल की मार्केटिंग मिल जाएगी । 1 "पवन को केंपस इंटरव्यू के बाद भाईलाल कंपनी ने उसे अपनी एल पी जी यूनिट में प्रसिद्ध प्रशिक्षु सहायक मैनेजर बना लिया। संस्थान का " नियम था कि अगर एक इंटरव्यूमें छात्र का चयन हो जाए तो वह बाकी के तीन नहीं दे सकता। इससे , 2"ज्यादा छात्र लाभान्वित हो रहे थे और कैंपस पर परस्पर स्पर्दा घटी थी।अहमदाबाद में नौकरी करने वास्ते पवन आता है वहां का वातावरण में घुलपिता से -मिल जाता है। वह कई दिनों से अपने माता - मिलने भी नहीं गया था बस फोन पर बात कर लेता था। अब उसे यह शहर अंजान नहीं लगता। वहाँ , पिता से मिलने इलाहाबाद गया था। तब उसे वहाँ -उसके कई दोस्त बन गए थे। पवन एक बार अपने माता तब स" वही जल जिसे पीकर वह बड़ा हुआ था। वह कहता है , का जल भी विष तुल्य लग रहा थाे अब तक गंगा जी में न जाने कितना मल मूत्र विसर्जित हो चुका है। मैं कहँगा यह पानी आपके लिए भी घातक है । एक्कागार्ड क्यों नहीं लगाते 3"?

इस प्रकार पवन नौकरी करने अहमदाबाद जाता है तो घर पर आना जाना कम हो जाता है। इस वजह से घरवालों से उसकी आत्मीयता और प्रेम कम हो जाता कम हो जाना स्वाभाविक है। माँ ने अपने बेटे को टूरिस्ट कहा तो उसके प्रतिक्रिया इस प्रकार है। माँ आपने मुझे टूरिस्ट कह दिया। मैं अपने घर " 4"आया हूँ टूर पर नहीं निकला हूं।

इस प्रकार आजकल के बच्चे बाहर रहकर पढ़कर सेट होने वाले बच्चों का भविष्य पवन जैसा ही है। और मांबाप की ही तरह है। आजकल शादी ब्याह परिवार का अर्थ ही बदल गई है -बाप का हाल पवन के मां- तो दोनों परिवार पहले मां बाप अपनी बहू को चुनते थे परिवार के सभी लोग सभी लोगों को पसंद आए वाले पवित्र संबंधों को जोड़ने का कार्य करते परंतु आजकल के सभी लड़के लड़कियां अपने जीवनसाथी को खुद चुन लेते है। बड़े महानगरों में लिविंग टुगेदर रिश्ते में ज्यादा विश्वास कर रहे हैं। यहाँ पवन की खास दोस्त बन गए हैं। अब उनमें से स्टेला अत्यंत खरीब की दोस्त हो गई है। अब वह दोनों साथसाथ रहने - लगेथे। पवन और स्टेला दोनों अपने भावी जीवन के बारे में निर्णय लेते हैं जिससे स्टेला के मातापिता - आज के " पिता इन्कार करते हैं तो पवन कहता है कि-बहुत राजी खुशी तैयार है लेकिन पवन के माता अलग नहीं रहा है। आप तो पढ़ी लिखी हो म- और पुरुष का उचित अलगजमाने में श्रीाँ समय की दस्तक पहचानो।इक्कीसवीं सदी में ये सड़े गले विचार लेकर नहीं चलना है हमें इनका तर्पण कर डालो।5"

पवन के इन शब्दों में मानवीय संबंधों में आए तीव आस का यथार्थ वर्णन है। आज बाजारवादी संस्कृति ने भावना प्रेम इंसानियत ममतामानवीयता आदि शब्द ,ों की सच्चाई को खत्म कर दिया पवन के मातापिता इनकार करते हुए आखिर बेटे की खुशी के लिए तैयार हो जाते हैं। लेकिन स्टेला और पवन - अलग रहते हैं।-हुए अलग विवाह के उपरांत साथ साथ रहने की अपेक्षा अपने करियर के हित में सोचते

आजकल हर एक मां बाप अपने बच्चों के करियर को लेकर बहुत चिंतित है। जरूरत से ज्यादा ही सोचते हैं इसलिए बड़ेबड़े स्कूलों व कालेजों में दाखिला दिलाते हैं।अगर बच्चे पढ़कर समय का मोहताज बन - इसको भी ले जाओगे तो हम दोनों बिल्कुल " हैं जैसे कि जाए तो मां बाप को छोड़कर बहुत दूर चले जाते अकेले रह जाएंगे। वैसे ही यहाँ सीनियर सिटीजन कॉलोनी बनती जा रही है। सबके बच्चे पढ़ लिख कर बाहर चले जा रहे हैं। हर घर में समझो एक बूढ़ा एक बूढ़ी एक कुत्ता और कार बस यह रह गया है 6" भूमंडलीकरण और बाजारवाद संस्कृति में भावनाओं का कोई कदर नहीं है। इसका संबंध मात्र पैसे से हैं। पवन के पिताजी अधिक संघर्ष कर उन्हें जो पढ़ाया लिखाया उनके बच्चे आज उसे मात्र अपना कर्तव्य समझते

हैं जो हर माताते हैं तो कहते हैं कि पिता अपने बच्चों के लिए करते हैं। ज्यादा से ज्यादा पढ़ाने की बात छेड़-जो कुछ खर्च किया उसे ब्याज सहित वापस कर देगा।

इस प्रकार संस्कृति और समाज पर बाजारवादी संस्कृति राज कर रही हैं। इस उपन्यास में हमारे देश में किस प्रकार बेरोजगारी की समस्या निर्धनता की समस्याओं से परेशान है। यदि सरकारी और गैर सरकारी के निराकरण में कोई ठोस प्रगति देखने में नहीं आई है। देश में लाखों युवक हर साल उपाधियां लेकर शिक्षा संस्थाओं से बाहर निकलते हैं और योग्य नौकरी न मिलने से अपने देश और परिवार के लोगों को चिंता का विषय बन जाता है। जिसका चित्रण तब यह लड़के उड़पी " ख सकते हैंउपन्यास में हम दे 'दौड' भोजनालय में एक मसाला दोसा खाकर सो जाते हैं इतनी तकलीफ में भी इन युवकों को कोई शिकायत न होती। अपने उद्यम में रहने और जीने का संतोष सबके अंदर। 7 "

विभिन्न कंपनियों में परस्पर व्यापारिक प्रतिस्पर्धा के कारण कई बार जब किसी कंपनी को घाटे या मंदी का शिकार होना पड़े तो वहां की कंपनी अपने कर्मचारियों की छंटनी करनी शुरू कर दी कर दिया करती हैं। इसी संदर्भ में इस उपन्यास के ये शब्द ध्यान देने योग्य है -जी जी सी एल लगातार घाटे में चलते" की छटनी शुरू हो गई थी। इसके आगे ममता कालियाजी चलते अब डूबने के कगार पर थी।कर्मचारियों प्रतिक्रिया इस प्रकार करती है कि इतना धैर्य नहीं था कि वे डूबते एम बी ए पास लड़कों से लड़कों में " 8 "किसी विकल्प की खोज में थे।-न-जहाज का मस्तूल संभालते। तभी किसी

इस उपन्यास में उपभोक्तावादी और बाजारवादी संस्कृति को विशेष रूप से रेखांकित किया गया है। इसी लक्ष्य को रेखांकित करने के कारण इसमें बाजारवादी मूल्यों और सीमाओं आदि का उल्लेख करना नितांत स्वाभाविक ही है था। वह आजकल बाजार में दिन दिन स्पर्धा खड़ी होती जा रही हैं।-ब-उत्पादनबीच तालमेल बैठाना दुष्कर कार्य था। एक एक उत्पाद की टक्कर म वितरण और विक्रय के, -20 विकल्प उत्पाद थे इन सबको श्रेष्ठ बताते विज्ञापन अभियान मार्केटिंग का काम आसान की बजाय 20 विज्ञापन कंपनी "मुश्किल होता जाता है। उपभोक्ता के पास एक एक चीज के कई चमकदार विकल्प थे। नई लड़कियां मॉडल बनन-या परिवर्तन और आकर्षण से भरपूर थी रोज नईकी दुनि े के सपना आंखों में लिए हुए कंपनी के द्वार खटखटा थी। उनके शोषण की आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता है।9"

यह भूमंडलीकरण व्यवसायिकता आज विकासवादी विज्ञापन उपभोक्तावाद आदि के मिश्रण से 'दौड़' बने मनुष्य की कहानी बहुत प्रभाववादी ढंग से प्रस्तुत करता ह ै। बेशक इस दौर में दौड़ने नवधनाढ्य वर्ग नई पीढ़ी के माध्यम से हिंदी कथा साहित्य में प्रतिमान या कीर्तिमान कायम किया है।

उपन्यास में सामाजिक परिवर्तन और गतिशीलता दिखाई देती है लेखिका ने अत्यंत तन्मय होकर ' दौड' बाजारवादी स्थिति का इसमें प्रभावी चित्रणकिया है। मानवीय मूल्यों में आए गिरावट को दिखाना ही इस उपन्यास का प्रमुख उद्देश्य है।र्थकता को प्रकट किया है। में सामाजिक स्थिति से जुड़कर जीवन की सा 'दौड़' उद्योग का चमकीला संसार और मनमाने संबंधों को इस में पूरे वास्तव के साथ अंकित किया है। यहाँ ये दिखान े का प्रयास कि बाजारवादी व्यवस्था ने अपने पारंपरिक नाते रिश्ते को कितना अनुदार और मतलबी बना दिया है इसको प्रभावी रूप में अभिव्यक्त करने का कार्य यह उपन्यास करता है। बाजारवादी व्यवस्था ने संबंधों के मूल्य कितने नष्ट किए हैं इसकी प्रामाणिक आलोचना करने वाला यह उपन्यास है। बाजार के आगे मनुष्य कितनीअंधी दौड़ लगा रहा है। मूल्यों को नष्ट कर रहा है इसको ही लेखिका अभिव्यक्त किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. दौड ममता कालिया 11 वाणी प्रकाशन
2. दौड ममता कालिया 12 वाणी प्रकाशन
3. दौड ममता कालिया 47 वाणी प्रकाशन
4. दौड ममता कालिया 46 वाणी प्रकाशन
5. दौड ममता कालिया 69 वाणी प्रकाशन
6. दौड ममता कालिया 42 वाणी प्रकाशन
7. दौड ममता कालिया 52 वाणी प्रकाशन
8. दौड ममता कालिया 61 वाणी प्रकाशन
9. दौड ममता कालिया 29 वाणी प्रकाशन

****